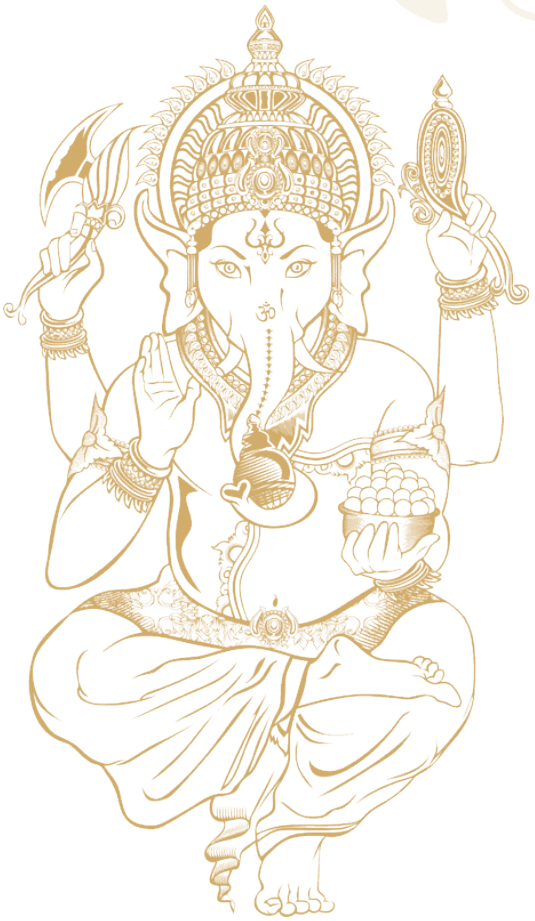

BABY NITESH BALTOO GHUNSA

02 Mar 2026

12:09 PM

Simla

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121495301**

तिथि 02/03/2026 **समय** 12:09:00 **वार** सोमवार **स्थान** Simla **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 31:06:00 उत्तर **रेखांश** 77:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:27:57 घं
वेलान्तर	00:12:09 घं
सूर्योदय	06:47:24 घं
सूर्यास्त	18:20:02 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	14
नक्षत्र	मघा
योग	अतिगण्ड
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मा-मानवी
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	शुक्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
केतु 5वर्ष 8मा 19दि
केतु
02/03/2026
21/11/2031

	02/03/2026
शुक्र	18/06/2026
सूर्य	24/10/2026
चन्द्र	25/05/2027
मंगल	21/10/2027
राहु	08/11/2028
गुरु	15/10/2029
शनि	23/11/2030
बुध	21/11/2031

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 1मा 1दि
भद्रिका
02/03/2026
03/04/2030

	02/03/2026
उल्का	12/10/2026
सिद्धा	02/10/2027
संकटा	11/11/2028
मंगला	01/01/2029
पिंगला	13/04/2029
धान्या	12/09/2029
भ्रामरी	03/04/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:25:44	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	---	0:00			
सूर्य			17:27:47	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	शत्रु राशि	1.63	भ्रातृ	पितृ	साधक
चंद्र			02:26:09	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.09	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	05:31:32	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	सूर्य	सम राशि	1.31	पुत्र	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध	व	अ	27:05:11	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.02	आत्मा	ज्ञाति	वध
गुरु	व		20:59:29	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.39	अमात्य	धन	वध
शुक्र			00:34:54	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.51	कलत्र	कलत्र	वध
शनि			07:39:08	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	सम राशि	0.95	मातृ	आयु	मित्र
राहु			14:45:29	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु			14:45:29	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

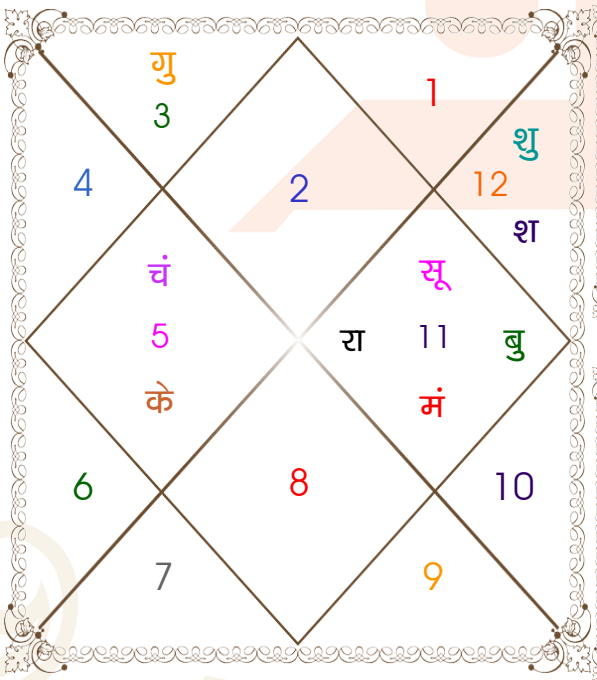

चन्द्र कुंडली

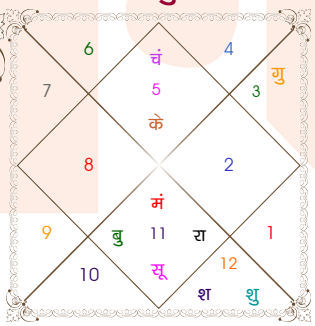

नवमांश कुंडली

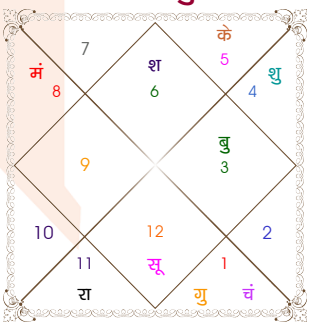

सर्वाष्टकवर्ग

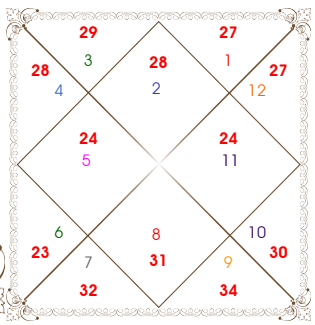

दशमांश कुंडली

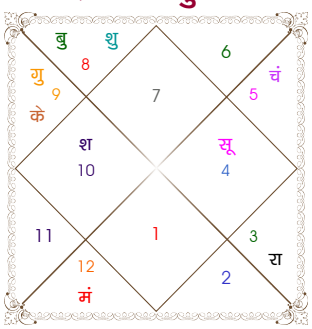

नक्षत्रफल

आप मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिहं तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ग मूषक, गण राक्षस, वर्ण क्षत्रिय तथा योनि मूषक होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का प्रथम अक्षर "म" या "मा" से प्रारम्भ होगा। यथा- ममता, मधु, मानसी आदि।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है। इसके प्रथम चरण में उत्पन्न होने से माता या माता के पक्ष को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शान्ति अवश्य करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28 हजार जप करवाने चाहिए तथा 28वें दिन जब पुनः यह नक्षत्र आवे उस दिन जपे हुए मँत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से किसी योग्य विद्वान द्वारा गण्डमूल की शान्ति करानी चाहिए। शान्ति से इसका अरिष्ट दोष न्यून अथवा खत्म हो जायेगा तथा संबंधित व्यक्ति आनन्द तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेगा।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में धन धान्य से सदैव पूर्ण रहेंगी। इन का आपको कभी भी अभाव नहीं होगा। आपके पास सेवा के लिए सेवक तथा नौकर चाकर हमेशा उपस्थित रहेंगे।आप समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुखैश्वर्यों का उपभोग करने वाली भाग्यशाली महिला होंगी। आपकी देवताओं तथा माता पिता के प्रति गहन श्रद्धा रहेगी। साथ ही आप एक उद्योगी महिला भी होंगी।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरुष होता है।

आप अपने माता पिता की मन से सेवा करने वाली होंगी तथा उनके दुःख सुख का ध्यान रखने के लिए सदैव यत्नशील रहेंगी। आप अधिकतर साहसी कार्य करना पसन्द करेंगी। क्योंकि आप में साहस का अभाव नहीं रहेगा। फलतः पुलिस या सेना में किसी उच्चधिकार पद को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगी। इसके अतिरिक्त राज सेवा में भी नियुक्त हो सकती हैं।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

आप क्षण क्षण में अपने स्वरूप परिवर्तन करने में दक्षता का प्रदर्शन करेंगी। आप उत्सवों की अत्यन्त शौकीन होंगी तथा स्वयं उत्सवों का आयोजन करने में भी सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप जनता पर शासन करने वाली मुख्य पदाधिकारी भी हो सकेंगी।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आप के हृदय में दया एवं करूणा का भाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। साथ ही स्वभाव भी आपका उग्र ही रहेगा। ज्ञान तथा विद्या प्राप्त करने में भी आप पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करेंगी। बुरे कर्मो से आप दूर रहेंगी तथा अच्छे कार्यो की ओर आपकी प्रवृति होगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी। शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप हमेशा सफलता प्राप्त करेंगी। कभी कभी आप स्वकृत कार्यो पर गर्व करेंगी। तथा हमेशा पुण्य एवं अच्छे कार्यो को करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। पुरूषवर्ग को आप पूर्ण रूप से अपने वश में करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप समाज से यथोचित आदर तथा सम्मान को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा

आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीड़ा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

सिंह राशि में पैदा होने के कारण आप तेजस्वी तथा उग्र स्वभाव से युक्त होंगी। आपके कपोल तथा मुखमडल भी विस्तृत आकार को होंगे। आपकी आँखें छोटी तथा पीत वर्ण से युक्त होंगी। पहाड़ों तथा जंगलों में भ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही मांस भक्षण में भी आपकी विशेष रूचि हो सकती है। यदा कदा आप अकारण ही क्रोधित भी हो जाएंगी। जीवन में आप मानसिक चिन्ताओं से चिन्तित रहेंगी। आपकी प्रवृति दानशीलता के भाव से भी युक्त रहेगी। तथा समय समय पर दान देकर इस प्रवृति का पालन करेंगी। अभिमान का भाव भी आप यदा कदा समाज में प्रदर्शित करेंगी। आप अपने माता पिता की प्रिय भक्त तथा तन मन धन से उनकी सेवा करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। अपनी तरफ से आप उन्हें कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। आपकी संतति में पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में ही रहेगी। साथ ही आप स्थिर बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा धैर्य पूर्वक अपने समस्त कार्यों कलापों को सम्पन्न करेंगी।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की आस्थियां अत्यन्त पुष्ट होंगी। तथा शरीर के रोग भी अल्प मात्रा में ही होंगे। आपका कंठ भाग स्थूलता से युक्त रहेगा तथा स्वभाव उग्रता लिए हुए होगा। आप कार्यारम्भ से पूर्व कोई न कोई स्वर या आवाज अवश्य ही करेंगी। आपका वक्षस्थल विस्तृत, सुन्दर तथा आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग समाज में आपके प्रभुत्व को मन से स्वीकार करेंगे। आपके स्वभाव की मुख्य विशेषता यह होगी कि आप हमेशा होशियार तथा जाग्रत रहेगी तथा किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले गम्भीरता से उसके हर पहलुओं का विचार करने के बाद ही उसे प्रारम्भ करेंगी।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपकी ठोड़ी स्थूल रहेगी तथा मुखाकृति भी विशाल होगी। माता की आप अत्यन्त प्रिय होंगी। तथा आप भी उन्हें हार्दिक सम्मान तथा सेवा प्रदान करेंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।

कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप अपने उदर पोषण के योग्य धनार्जन से सन्तुष्ट होने वाली होंगी। तथा स्वभाव से ही आपमें क्रोध अधिक रहेगा। वनों एवं पहाड़ों पर भ्रमण की उत्सुकता हमेशा आपके मन में बनी रहेगी। साथ ही आप सेवक तथा बन्धुओं से यु यूक्त रहेंगी।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

क्षमाशीलता का गुण नैसर्गिक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करना श्रेयस्कर समझेंगी। आप कुछ न कुछ कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा समय को बरबाद नहीं करेंगी। मांस के साथ आप समय अनुसार मदिरा का भी प्रयोग कर सकती हैं। आप हमेशा देश विदेशों के भ्रमण में ही व्यस्त रहेंगी। लेकिन शीत से आप भयभीत रहेंगी। आप सन्मित्रों से युक्त तथा विनम्र स्वभाव से युक्त रहेंगी। जिससे समाज से आपको पूर्ण मान तथा सम्मान प्राप्त होगा। आप कई बुरी आदतों या व्यसनों से भी युक्त रहेंगी। लेकिन संसार में पूर्ण रूप से यश तथा सम्मान से युक्त रहेंगी। इससे आपकी ख्याति को विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आँखें सुन्दर तथा शारीरिक संरचना अत्यन्त सुन्दर आकर्षक एवं दर्शनीय होंगी। आप अत्यन्त ही गम्भीर दृष्टि से युक्त होंगी तथा अपना सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी। उग्र प्रवृति होने के कारण यदा कदा आपके कारण घर में किसी भी प्रकार का कलह या अशान्ति हो सकती हैं। अतः पारिवारिक जनों से बुद्धिमता पूर्वक सांमजस्य के लिए आपको प्रयत्नशील रहना चाहिए।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की अधिक बातें बोलने वाली होंगी तथा आपके मन में कठोरता का भाव भी रहेगा। दया तथा करूणा का भाव अल्प ही रहेंगा। आप अपने कार्यों को साहस के साथ सम्पन्न करेंगी। तथा साहसिक कार्यों को करने में विशेष रूचिशील रहेंगी। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही क्रोध करने वाली होंगी। तथा अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए किसी भी कार्य को करने के लिए तैयार रहेंगी। आप अन्य लोगों से अकारण विवादादि करेंगी। अतः दूसरे लोगों से आपको संयमशील तथा विनम्र व्यवहार करना

चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह आदि व्याधि से पीड़ित भी रह सकती हैं। आपका रूप सामान्य सुन्दर कहा जा सकेगा। साथ ही कभी कभी आप अत्यन्त ही कठोर वाणी का प्रयोग भी करेंगी जो श्रोता के मन को अच्छी नहीं लगेगी। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों को ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप एक बुद्धिमती महिला होंगी। तथा हमेशा अपने कार्यों या कुछ न कुछ परिश्रम करने में रत रहेगी। आपको निष्क्रिय होकर बैठना अच्छा नहीं लगेगा। तथा सक्रिय रहना आपको रूचिकर प्रतीत होगा। धन धान्य तथा वैभव आदि से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। इनका आपके जीवन में अभाव नहीं रहेगा। आपकी प्रवृति ऐसी होगी कि आप कभी किसी भी मनुष्य का विश्वास नहीं करेंगी। आप जो भी कार्य किसी अन्य के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहेंगी। उसे अपने समक्ष ही पूर्ण करवाएंगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न

रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां मूलनक्षत्र, बवकरण, धृतियोग, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्यिक राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों मूल नक्षत्र धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान दें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता का आभास हो रहा हो अथवा व्यापार नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको आपने इष्ट सूर्य देव की उपासना करनी चाहिए तथा प्रातः काल सूर्य भगवान को अर्ध्य प्रदान करना चाहिए और रविवार का उपवास भी रखना चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी। तथा शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी। साथ ही सोना, ताम्र, रक्त, वस्त्र, रक्त पुष्प, गेहूँ, गुङ, घी आदि पदार्थो का भी श्रद्धा पूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।